सभी समस्याओं का मात्र एक समाधान

- ब्र.कु. योगिनी,मुम्बई

पवित्रता अर्थात क्या

पवित्रता को शरीर मात्र के साथ नहीं जोड़ना है, पवित्रता तो मन की, तन की, धन की, समय की, संकल्पों की भी है। शब्दों का उपयोग तथा कार्य आदि करने में भी पवित्रता का अमूल्य योगदान है। परमात्मा की श्रीमत् के अनुसार पवित्र व्यक्ति मन वचन कर्म तीनों से पवित्र होगा। यहाँ तक कि स्वप्न और संकल्प में भी उसके किसी और के लिए बुरे भाव नहीं आएंगे। इसीलिए तो कहते हैं कि पवित्रता की परिभाषा बहुत सूक्ष्म है।

पवित्रता के कुछ प्रकार ये हैं-

मन की पवित्रता

सदैव ईश्वर के श्रीमत प्रमाण ही संकल्प करना, शुभ भावना, शुभ कामना, दातापन की भावना सदैव स्व, दुसरों और विश्व प्रति श्रेष्ठ संकल्प ही करना।

लाभ:- पवित्र मन सदैव श्रेष्ठ और कल्याणकारी ही संकल्प करता है जिससे प्योर vibrations सारे विश्व में फैलते हैं जो जीव-जन्तुओं और प्रकृति के लिए भी कल्याणकारी है। वहीं विकारी मन, जो विकारों के वश होता है उससे नकारात्मक और अशुद्ध vibrations विश्व की तमोप्रधानता को और भी बढ़ाते हैं। ग्लोबल वार्मिंग के मुख्य कारणों में हमारे मेन्टल एनर्जी का दूषित होना भी है। हमारे विचारों से ही समाज का निर्माण होता है। गैसों के साथ हमारे मानसिक wastes के कारण भी पर्यावरण प्रदूषित होता है।

तन की पवित्रता

ब्रह्मचर्य का पालन करने से हमें शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक लाभ होता है। जिससे हमारे जीवनद्रव्य की रक्षा होती है जो ब्रेन में निर्मित होता है। ब्रेन की बहुत सारी ऊर्जा बच जाती है। फलस्वरूप हमारी आयु लम्बी होती है। ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले मानव सदा निरोगी और स्वस्थ होते हैं। उन्हें हर जगह मान-सम्मान और यश की प्राप्ति होती है।

पवित्र भोजन

जैसा अन्न वैसा मन। हमारे भोजन का प्रभाव हमारे मन पर भी पड़ता है। तामसिक भोजन मन को विकारी बनाता है, वहीं शुद्ध सात्विक मन एक स्वस्थ शरीर और मन दोनों के निर्माण में सहायक है। सात्विक भोजन से परमात्मा की शक्ति भी मिलती है, क्योंकि वो परमात्मा की याद में बनाया जाता है। वहीं मांसाहार का सेवन या जंक फूड खाने से तन और मन दोनों को हानि होती है, वहीं हम जीवहत्या के भी दोषी बन जाते हैं।

कर्मों की पवित्रता

ज्ञान के सागर शिव बाबा ने हमें कर्मों की गुह्य गति का ज्ञान दिया है। साथ ही साथ हमें मास्टर त्रिकालदर्शी बन कर्म करने की प्रेरणा दी है। बाबा हमें सदैव अपने हर कर्म उनको समर्पित कर निमित्त भाव से कर्म करने को बोलते हैं जिससे हम कर्मों के परिणाम के प्रभाव से बच जाते हैं। बाबा हमें कर्मयोगी बनने की शिक्षा देते हैं। हमारे हर कर्म स्व और दूसरों प्रति कल्याणकारी हों जिससे हमारा भविष्य उज्जवल बनता है। सत्कर्म से हमारे जमा का खाता बढ़ता है और ईश्वर के सहयोगी बनकर हम अपना भाग्य श्रेष्ठ बना लेते हैं। परमात्मा हमें कर्मों में भी अहिंसा की सेवा देते हैं। न किसी को दु:ख देना न दु:ख लेना। सदा दूसरों की सेवा कर दुआ का खाता बढ़ाना और सबको परमात्मा के बताये मार्ग पर चलने की शिक्षा देना। अपने प्रैक्टिकल जीवन से परमात्मा को प्रत्यक्ष करना ही हमारे आध्यात्मिक जीवन का उद्देश्य हो। स्वपरिवर्तन से विश्वपरिवर्तन का लक्ष्य सहज ही हो जाएगा और फिर से रामराज्य आ जाएगा।

लाभ:- दूसरों की बद्दुआयें लेने से बचेंगे और नए कार्मिक एकाउंट्स अच्छे ही बनाएंगे।

धन की पवित्रता

दूसरों की दुआएं लेते हुए सदा मेहनत और ईमानदारी से ही धन अर्जित करेंगे और धन को ईश्वरीय सेवा में लगाएंगे। कभी भी रहमदिल बन कुपात्र को धन का दान नहीं करना जिससे बोझा खुद पर आये। पवित्र धन घर में शांति और खुशहाली लेकर आता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि पवित्रता की धारणा से ही आत्मा अन्य गुणों को स्वत: ही धारण करने और अपने पावन बनने की राह पर अग्रसर हो जाती है।

विकारों का परिवर्तित रूप

काम:- काम विकार शुभ कामना के रूप में आपके पुरूषार्थ में सहयोगी रूप बन जायेगा। काम के रूप में वार करने वाला शुभ कामना के रूप में विश्व-सेवाधारी रूप बन जायेगा। दुश्मन के बजाए दोस्त बन जायेगा।

क्रोध:- क्रोधाग्नि के रूप में जो ईश्वरीय सम्पत्ति को जला रहा है, जोश के रूप में सबको बेहोश कर रहा है, यही क्रोध विकार परिवर्तित हो रूहानी जोश वा रूहानी खुमारी के रूप में बेहोश को होश दिलाने वाला बन जायेगा। क्रोध विकार सहन-शक्ति के रूप में परिवर्तित हो आपका एक शस्त्र बन जायेगा। जब क्रोध सहन शक्ति का शस्त्र बन जाता है तो शस्त्र सदैव शस्त्रधारी की सेवा अर्थ होते हैं। यही क्रोध अग्नि, योगाग्नि के रूप में परिवर्तन हो जायेगी जो आपको नहीं जलायेगी लेकिन पापों को जलायेगी।

लोभ:- इसी प्रकार लोभ विकार ट्रस्टी रूप की अनासक्त वृत्ति के स्वरूप में, उपराम स्थिति के स्वरूप में, बेहद की वैराग्य वृत्ति के रूप में परिवर्तित हो जायेगी। लोभ खत्म हो जायेगा और सदा 'चाहिए-चाहिए' के बदले 'इच्छा मात्रम् अविद्या' स्वरूप हो जायेंगे। लोभ को 'चाहिए' नहीं कहेंगे, लेकिन 'जाइये', 'लेना है नहीं', 'देना है,देना है' यह परिवर्तन हो जायेगा। यही लोभ अनासक्त वृत्ति वा देने वाला दाता के स्वरूप की स्मृति-स्वरूप में परिवर्तन हो जायेगा।

मोह:- इसी प्रकार मोह विकार वार करने के बजाए स्नेह के स्वरूप में बाप की याद और सेवा में विशेष साथी बन जायेगा। स्नेह 'याद और सेवा' में सफलता का विशेष साधन बन जायेगा।

अहंकार:- ऐसे ही अहंकार विकार देह-अभिमान से परिवर्तित हो स्वाभिमान बन जायेगा। स्व-अभिमान चढ़ती कला का साधन है। देहाभिमान गिरती कला का साधन है। देहाभिमान परिवर्तित हो स्व-अभिमान के रूप में स्मृति-स्वरूप बनने में साधन बन जायेगा।

इसी प्रकार यह विकार अर्थात् विकराल रूपधारी आपकी सेवा के सहयोगी, आपकी श्रेष्ठ शक्तियों के स्वरूप में परिवर्तित हो जायेंगे। ऐसे परिवर्तन करने की शक्ति अनुभव करते हो? इन तीन स्मृतियों के आधार पर पाँचों का परिवर्तन कर सकते हो।

काम के रूप में आये शुभ भावना बन जाए, तब माया-जीत जगतजीत का टाइटल मिलेगा। विजयी, दुश्मन का रूप परिवर्तन ज़रूर करता है। जो राजा होगा वह साधारण प्रजा बन जायेगा, तब विजयी कहलाया जायेगा। मन्त्री होगा वह साधारण व्यक्ति बन जायेगा तब विजयी कहलाया जायेगा।

वैसे भी नियम है कि जो जिस पर विजय प्राप्त करता है उसको बन्दी बनाकर रखते हैं, अर्थात् गुलाम बनाके रखते हैं। आप भी इन पाँच विकारों के ऊपर विजयी बनते हो। आप इनको बन्दी नहीं बनाओ। बन्दी बनायेंगे तो फिर अन्दर उछलेंगे। लेकिन आप इन्हें परिवर्तित कर सहयोगी-स्वरूप बना दो। तो सदा आपको सलाम करते रहेंगे। विश्व-परिवर्तन के पहले स्व-परिवर्तन करो। स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन सहज हो जायेगा। परिवर्तन करने की शक्ति सदा अपने साथ रखो। परिवर्तन-शक्ति का महत्व बहुत बड़ा है।

पवित्रता एक ऐसी पूंजी है जिससे हम सभी प्रकार के सुख ले सकते हैं। इस शक्ति से लोगों ने दुनिया में हर एक चीज़ को अपने वश किया है। चाहे वो प्रकृति हो या प्रकृति का आकर्षण हो। पवित्रता को ही सुख और शांति की माता का दर्जा प्राप्त है। यदि आज कोई अपवित्र है तो वह हर तरह से दु:खी है। पवित्रता की अग्नि विकारों को समूल नाश करने का माद्दा रखती है।

फतेहपुर-उ.प्र.। केन्द्रीय मंत्री सुश्री निरंजना ज्योति जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सीता। साथ हैं अन्य भाई बहनें।

बुटवल-नेपाल। नेपाल के संघिय मामला तथा स्थानीय विकास राज्यमंत्री श्री प्रसाद जवेगु को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. देविका।

झालावाड़-राज.। 'स्वास्थ्य समृद्धि और खुशी' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. ई.वी. गिरीश,मुम्बई, इन्द्रजीत सिंह झाला, जिला स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. साजिद खान, इनरव्हील क्लब अध्यक्षा मंजूला विजय, डॉ. सुषमा पाण्डेय, लायन्स क्लब अध्यक्ष खैराज काशवानी तथा ब्र.कु. मीना।

पानीपत-हरियाणा। डब्ल्यू.डब्ल्यू.ई. वर्ल्ड चैम्पियन द ग्रेट खली को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. स्मृति, ब्र.कु. शिवानी तथा ब्र.कु. डॉ. दीपक हरके।

राँची-झारखण्ड। दीपावली पर आयोजित आध्यात्मिक मिलन कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए आरोग्य भवन, बृजमोहन साहू,डीन,कॉमर्स डिपार्ट.,राँची यूनिवर्सिटी, ब्र.कु. निर्मला, विद्या अग्रवाल,प्रेसीडेंट,अग्रवाल महिला मंच, विश्वनाथ सिंह,स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया तथा अमरेन्द्र विष्णुपुरी,विश्व हिन्दु परिषद।

कानपुर-बर्रा(उ.प्र.)। सत्या सुज़ूकी मोटर के एम.डी. सुमित मिश्रा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शशि तथा ब्र.कु. सुनीता।